SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-2, Oct-Dec- 2023
www.shikshasamvad.com

अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

एकता सागर
शोध अध्येत्री
शिक्षक– शिक्षा विभाग
बरेली कॉलेज, बरेली
ई–मेल. ektasagar301@gmail.com

प्रो0 (डा0) आर0के0 आज़ाद
प्राचार्य,
एस.एस.कालेज,शाहजाहाँपुर, उ0प्र0
ई–मेल-azadrkcb@gmail.com

सारांश –

प्रस्तुत अध्ययन में अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु मुरादाबाद मंडल के अन्तर्गत आने वाले बिजनौर जनपद,रामपुर जनपद,जे0पी0 नगर,सम्भल में संचालित समस्त अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों को शामिल किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तो का संकलन सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है। ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध आलेख सार–

प्रस्तुत अध्ययन में अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया गया है। उद्देश्यों के रूप में अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत् पुरुष शिक्षकों एवं महिला शिक्षिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन कार्य में ऑकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन कार्य में मुरादाबाद जनपद के

सभी अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत सभी शिक्षकों से है। अध्ययन के समस्त अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालय समष्टि है। तथा अध्ययन के लिये चयनित शिक्षक न्यादर्श है। शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता के मापन हेतु Emotional Maturity Scale by Dr. Yashvir Singh and Dr. Mahesh Bhargava प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। ऑकड़ों के विश्लेषण हेतु 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षको की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर होता है अर्थात् अनुदानित एवं स्ववित्रपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता में असमानता है।

भूमिका –

आधुनिक युग में शिक्षा परिवर्तन का माध्यम है। शिक्षा के तीन प्रमुख अंग माने जाते हैं जैसे शिक्षक, छात्र एवं पाठ्यक्रम। शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया को सफल बनाने के लिये शिक्षा की सहायता लेते हैं। संवेगात्मक परिपक्वता का सामान्यतः अर्थ होता है कि व्यक्ति वातावरण में स्थित परिस्थितियों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करता है। व्यक्ति किस प्रकार स्वयं पर नियन्त्रण रखता हैं। बालकों के संवेगों कभी भी स्थायी नहीं होते समय के साथ–साथ जिस प्रकार उनकी आयु बढ़ती है वैसे–वैसे बालको में संवेगात्मक परिपकाता आ जाती है। ऐसा होने पर बालक वयस्कों जैसा व्यवहार करने लगता है। संवेगात्मक परिपक्वता व्यक्ति की स3ण्मझ को विकसित करती है।

सेंवागात्मक परिपक्वता का प्रभाव वातावरण व समाज दोनो पर पड़ता हैं। **डा. दिव्या शर्मा, डा. अरूण दुबे के अनुसार,"** शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत छात्रों के पारिवारिक वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक सहसंबंध नही पाया गया है। (2012) संवेगात्मक परिपक्वता व्यक्ति को वातावरण के साथ समायोजित होना सिखाती है। यह वह सम्प्रत्यय है जो व्यक्ति में उच्च समझ को विकसित करती है। माध्यमिक स्तर पर छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता चर सीमा पर होती है। डॉ राजेन्द्र प्रसाद (2015) अपने शोध निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता विभिन्न प्रकार से विकसित होती है जो छात्रों एवं शिक्षकों को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करती है क्योंकि संवेग इन छात्रों को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करते हैं जिसके कारण इनकी बुद्धि, स्मरण शक्ति, बल, आत्मविश्वास प्रेरणा, समायोजन शक्ति आदि प्रभावित होती है। सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता मे सार्थक अन्तर पाया गया है। लड़कों की तुलना में लड़कियों मे संवेगात्मक परिपक्वता कम पायी

जाती है। **ऑड (1988)** के अनुसार,'' शिक्षको को स्वयं के लिये मूल्यो का विर्धारण करना अत्यन्त आवश्यक होता है ताकि उनकी शिक्षण कार्य प्रेरणा कायम रह सके।

उद्देश्य – प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।
2. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।
3. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षिण महाविद्यालयों में कार्यरत् पुरुष शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

1. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयो में कार्यरतु शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षको की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि – प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श का चयन (Selection of Sampling) प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के चयन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि जोकि एक अस्मभाव्य न्यादर्श प्रविधि (Non- Probability Sampling Method) का प्रयोग किया गया है। अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षको का चयन आकस्मिक चयन विधि (Incidental Sampling Method) द्वारा किया गया है। जिसमें कुल 100 शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

उपकरण – प्रस्तुत अध्ययन कार्य हेतु सम्बन्धित प्रश्नों को कम संकलन विश्लेषण हेतु, वर्णनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों में मध्यमान एवं मानक विचलन तथा निर्वाचनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण – प्रस्तुत अध्ययन डाटा का विश्लेषण इस प्रकार है–

तालिका– 01

1. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षको की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

व्याख्या–

क्र0सं	महाविद्यालय	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D)	D= (m_1m_2)	'टी' अनुपात	सार्थकता स्तर
1	अनुदानित महाविद्यालयों के शिक्षक	40	45.33	2.29	2.98	6.55	1.98 df-102
2	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षक	60	42.35	3.16			

प्राप्त 'टी' अनुपात का मान 6.55 है। 'टी' अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात टी–अनुपात सारणीमान से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः कहा जा सकता है कि अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर है।

तालिका– 02

अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नही है।

क्र0सं	महाविद्यालय	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिकविचलन (S.D)	D= (m_1m_2)	'टी' अनुपात	सार्थकता स्तर
1	अनुदानित महाविद्यालयों के शिक्षक	40	45.33	2.29	5.59	10.09	1.98 df-102
2	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षक	60	39.74	3.29			

व्याख्या–

प्राप्त टी– अनुपात का मान 10.09 है। टी– अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् 'टी' अनुपात सारणीमान से अधिक है अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः यह कहा जा सकता है कि अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयो में कार्यरत शिक्षकों की संवेगात्मक अन्तर है।

तालिका– 03

अनुदानित एवं स्ववित्त्पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों की संवेगात्मक परिपवकतायें सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र0सं	महाविद्यालय	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिकविचलन (S.D)	D= (m_1m_2)	'टी' अनुपात	सार्थकता स्तर
1	**अनुदानित महाविद्यालयों के शिक्षक**	40	42.35	3.16	2.61	4.70	1.98 df-147
2	**स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षक**	60	39.74	3.29			

व्याख्या–

प्राप्त टी अनुपात का मान 4.70 है। 'टी' अनुपात का सारणी मान 1.98 हैं। अतः कहा जा सकता है। कि 0.05 स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। परिणामतः कहा जा सकता है कि अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्षो के आधार पर दिये गये सुझाव प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम इस प्रकार इंगित करते है–

1. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षको की संवेगात्मक परिपक्वता में समानता नहीं है अतः स्पष्ट है कि इन महाविद्यालयों के शिक्षको की रुचियों एवं मूल्यों में भिन्नता देखने को मिलती है।
2. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयो में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता में समानता नहीं है बल्कि पर्याप्त अन्तर है। इसका कारण यह है कि अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयो में कार्यरत शिक्षक समय–समय पर होने वाली राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में समय–समय पर भाग लेते रहते हैं जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि होती है।
3. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता में समानता नही है बल्कि पर्याप्त अन्तर है। इसके निम्न कारण हैं–
    1. शिक्षकों की कार्य करने की गतिविधियों में अन्तर का होना।
    2. शिक्षकों में जागरूकता का होना।
    3. शिक्षकों की मनोवृत्ति का उच्च होना।
4. शिक्षकों की शिक्षण विधियों में पर्याप्त अन्तर होना।
5. शिक्षको में पर्याप्त संवेदनशीलता का होना इत्यादि।

उपयोगिता–

अध्ययनकर्त्री ने अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। संवेगात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक कौशल सहानुभूति, जिम्मेदारी और जीवन के अनुभवो वाला व्यक्ति होता है। परिपक्व व्यक्ति अपने संवेगों पर नियन्त्रण करना सीख जाता है। संवेगात्मक परिपक्वता को सुखी व सन्तुष्ट जीवन व्यतीत करने का आधार कहा जाता है। शिक्षक जोकि समाज का महत्वपूर्ण अंग होता है। शिक्षक की भूमिका में समाज में स्थापित होने जा रहे हैं तो हमे छात्रों के साथ अन्तः क्रिया करनी होगी, छात्रों के संवेगों को समझना होगा। आधुनिक समाज बुद्धिजीवी का समाज कहलाता है। संवेगात्मक परिपक्वता व्यवहार की वह विशेषता है जिसमें व्यक्ति अपने संवेगों को नियन्त्रित रखता है। अध्ययन की उपयोगिता इसलिये और भी बढ़ जाती है। कि वर्तमान समाज मे बालक शारीरिक मानसिक सामाजिक व आध्यात्मिक विकास संवेगात्मक परिपक्वता के कारण होता है। बालक अपने शिक्षको से अधिक प्रभावित होते है। अतः अध्ययन इस क्षेत्र मे मील का

पत्थर साबित हो सकेगा इस अध्ययन की प्रांसगिकता संदेह से बिल्कुल परे है, ऐसी हम आशा करते हैं।

सन्दर्भ (References)

1. शर्मा, आर0ए0 (2011) शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर लाल बुक, डिपो मेरठ।
2. माथुर एस0एस0 (2013) शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
3. मेयर जे0डी0 क्रूसो, डी0 एवं सॉल्वे, पी0 (2005) इमोशनल इन्टैलीजेन्स मीटस टेडिशनल स्टूडेन्टस फॉर एन इन्टैलीजेन्स, 27,267–268।
4. श्री वास्तव –डी0 एन0 (2005) सांख्यिकीय एवं मापन।
5. भटनागर, आर0पी0 शिक्षा अनुसन्धान विधि एवं विश्लेष्ण लायक बुक डिपो, मेरठ 1988
6. आहूजा.आर.रिसर्च मैथड्स, न्यू देहली, रावत पब्लिशर्स, 2001
7. ब्लेयर जोन्स एवं सिम्पसनः एजुकेशन साईकोलोजी मैकमिलन,1962
8. एल. हंस देवकी नन्दनः सांख्यिकी के सिद्धान्त
9. A Chamberlain V.C (1960), Adolescence to maturity the Badley Head London
10. .Bansibihari,P, and Surwade,L,(2006),"Effect of Emotional Maturity on the effectiveness of teacher" Edutracks, Neelkand and Publication Private Limited Hydrabad, VOL.6, No1 PP 37-38

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-01, Issue-02, Oct-Dec- 2023
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2023/17

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

एकता सागर एवं प्रो0 (डा0) आर0 के0 आज़ाद

For publication of research paper title

"अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-02, Month December, Year- 2023.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com